# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविंदजी देवसी फेक्टरी कम्पाउंड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

**सम्यग्ज्ञान परिचय** द्वितीय वर्ष

## ◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

एनरोलमेन्ट नंबर Nov 2019 शहर ______________

विद्यार्थी का नाम ______________

**प्रश्न-१ रिक्त स्थान**

| | |
|---|---|
| (१) | अनंत सुख |
| (२) | पंचभेद |
| (३) | तिर्यंच गति |
| (४) | मेहर-ज्ञानकुमार |
| (५) | आर्जितनाथ भगवान |
| (६) | साढ़े तीन हाथ |
| (७) | प्रत्येक |
| (८) | लंघा आदि |
| (९) | रजोमय |
| (१०) | प्रथम चतुष्क |
| (११) | क्रूरता |
| (१२) | भोज मुनिराज |
| (१३) | अंतःकोटाकोटि |
| (१४) | निरवद्य |
| (१५) | प्रथम दशक |
| (१६) | महासेन |
| (१७) | वज्रऋषभनाराच |
| (१८) | शांतिस्नान |
| (१९) | छद्मस्थ आदि |
| (२०) | नेमनाथस्वामी |

**प्रश्न-२ एक ही शब्द में**

| | |
|---|---|
| (१) | अपवर्तनीय |
| (२) | मायासमान |
| (३) | गच्छाधिपति |
| (४) | वर्षधर पर्वत |
| (५) | आर्जितनाथ भगवान |
| (६) | सचित्त प्रतिबद्ध |
| (७) | पिंड प्रकृति |
| (८) | विजया देवी |
| (९) | आर्जिका, मुख्यानेवा |
| (१०) | तृतीय चतुष्क |
| (११) | पच्चक्खाण |
| (१२) | सिद्धकूट |
| (१३) | प्रभवंदन |
| (१४) | वज्रऋषभनाराच |
| (१५) | तिर्यंच गति |
| (१६) | आचार्यादि |
| (१७) | इत्यादि |
| (१८) | किमारक्कम |
| (१९) | जघन्य |
| (२०) | नरक |
| (११) | प्रकृतियां |
| (१२) | मेरुपर्वत |
| (१३) | व्यंतर देवो |
| (१४) | जाता हूं |
| (१५) | जांच |
| (१६) | चतुष्क |
| (१७) | संस्थान |
| (१८) | |
| (१९) | तपहारा |
| (२०) | वेश |
| (२१) | सूक्ष्म |

**प्रश्न-३ शब्दार्थ**

| | |
|---|---|
| (१) | स्पर्श |
| (२) | प्रवर्तक |
| (३) | सहसा |
| (४) | विद्युत्प्रभ |

**प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) | ७ | (६) | ३ |
| (२) | ५ | (७) | १० |
| (३) | ८ | (८) | ६ |
| (४) | ९ | (९) | 2 |
| (५) | ६ | (१०) | ४ |

**प्रश्न-५ संख्या में जवाब**

| | |
|---|---|
| (१) | ४ |
| (२) | ८६ |
| (३) | ६८ |
| (४) | ७४ |
| (५) | ३६ |
| (६) | ९६ |
| (७) | ३५ |
| (८) | 20 |
| (९) | ४ |
| (१०) | ६५ |

| प्रश्न-६ ✓ या × | | प्रश्न-७ के कारण किन कारण | |
|---|---|---|---|
| (१) | ✓ | (१) | |
| (२) | × | (२) | |
| (३) | ✓ | (३) | |
| (४) | × | (४) | |
| (५) | ✓ | (५) | |
| (६) | × | (६) | |
| (७) | ✓ | (७) | |
| (८) | × | (८) | |
| (९) | ✓ | (९) | |
| (१०) | ✓ | (१०) | |

| प्रश्न-१ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | + | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | = | कुल गुण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | | | |

रीमार्क ______________ जांचनेवाले की सही ______________

प्रश्न - ८

१. जिस कर्म के उदय से जीव निश्चित काल की पूर्णता से पहले मृत्यु प्राप्त नहीं कर सकता, वह पूर्ण होने के बाद ही तब ही मृत्यु पाये, ऐसा जो कर्म है वह आयुष्य कर्म है। आयुष्य कर्म के दो प्रकार है- अपवर्तनीय याने काल की अपेक्षा से कम हो सके, टूट सके ऐसा और अनपवर्तनीय याने काल की अपेक्षा से कम न हो सके ऐसा। शांतिपूर्वक, लंबे समय तक जीव जीये वह अनपवर्तनीय आयुष्य है। अकस्मात, आत्महत्या अथवा किसी बाह्य कारण से आयुष्य कम हो जाये वह अपवर्तनीय आयुष्य कहलाता है। आयुष्य कर्म के चार भेद है। १) देवायुष्य कर्म २) मनुष्यायु कर्म ३) तिर्यंचायु कर्म और ४) नरकायु कर्म। दूसरे सात कर्म हर समय बांधते है, लेकिन आयुष्य कर्म जीवन में एक बार ही बांधा जाता है। आयुष्य कर्म पर्वतिथि को ही बंधता है, इसलिए पर्वतिथी आराधनामय बनानी चाहिए।

२. गुरु को वंदन करने से प्राणी नीच गोत्र का क्षय करता है। उच्च गोत्र का बंध करता है। निकाचित कर्मग्रंथि का भेदन करके वह थोड़ा शिथिल बंधनरूप कर देता है। आचार्यादि गुरुभगवंतो का विशेष बहुमान करना चाहिए। गुरु को आते हुए देखकर खड़े होना, सामने जाना, मस्तकपर अंजलिबद्ध प्रणाम करना, उन्हे आसन देना, उनके आसन ग्रहण करने के बाद ही उनके सामने विनयपूर्वक बैठना, इस तरह गुरु का बहुमान करना चाहिए। गुरु के बराबर पास बैठने से, गुरु के आगे बैठने से, गुरु को पीठ देकर बैठने से, गुरु के आगे पैर पर पैर चढ़ाकर बैठने से, लंबे पैर कर बैठने से गुरु की आशातना होती है। पलाठी मारकर, खम्भा या दिवाल का टेका लेकर, पैर फैलाकर, विकथा करते हुए, अधिक हसते हुए, गुरु के पास बैठे तो गुरु की आशातना होती है। गुरु की तैंतीस आशातनाए है जो टालनी चाहि

३. एक बार उपयोग में आये ऐसी भोग वस्तुओ का एवं बारंवार उपयोग मे आये ऐसी उपभोग की वस्तुओ का नियम करना यह भोगोपभोग व्रत है। यह भोजन से और कर्म से ऐसे दो प्रकार के है। इसमे भोजन प्रकार के चौदह नियम प्रतिदिन दिन के व रात्रि के धारण करके पालने के है। कर्म से याने की सात व्यसन, बावीस अभक्ष्य, बत्तीस अनंतकाय तथा पन्द्रह कर्मादान का त्याग करने का होता है। इस व्रत में चौथा दुःपक्वौषधि का अतिचार लगता है, वो इस तरह- कुछ कच्चे व कुछ पक्के ऐसे हरे चने, पोंक, ऊंबी, ज्वार के पोंक इत्यादि सर्व जाती के पोंक उन पर अग्निसंस्कार हुआ इसलीये वो अचित्त हो गये ऐसा अचित्त मानकर आहार करे तो उसे यह चौथा अतिचार लगता है।

४. मौर्यपुत्र की शंका ऐसी थी की वर्षों से यज्ञ स्नादि कराने के बावजूद तथा मंत्र आदि का जाप नित्य करने के बावजुद भी देव-देवियों का दर्शन कभी हुआ नही तो ये यज्ञ सिर्फ मनःशान्ति के लिये ही है क्या? तो देव-देवी कोई है ही नही? होते तो आते क्युं नही? और उनका रहेना का स्थान कहीं भी दिखाई नहीं देता- ऐसा क्यु? तो ये सब देव मायारूपी ही है। वास्तव में देव नही है। इस शंका का समाधान भगवान ने ऐसा बताया की वेदपद देवों के अस्तित्व को दर्शानेवाले है। और प्रत्यक्ष रूप से तु इस समवसरण में आकर बैठे देवो को देख रहा है, इसलीये देवों के अस्तित्व के विषय में शंका मत रखना। वेदपदो में जो मायासमान देवो को बताने में आये है, उनको भी च्यवित होके दूसरी गति में जाना पडता है, दूसरे जीव अच्छे कार्य करके देव होते है।

५. सभी ६९ पर्वतों का अंतिम शिखर को सिद्धकूट कहेते है और इसके उपर जो शाश्वत जिनचैत्य है उनको सिद्धायतन कहेते है। प्रत्येक सिद्धायतन के मध्य में ऋषभानन, चंद्रानन, वर्धमान तथा वारिषेण जिन की प्रत्येकी २७-२७, याने की कुल १०८ प्रतिमाजी विराजमान है। सिद्धायतन को पश्चिम दिशा में द्वार नही है। बाकी तीन दिशाओं में तीन द्वार पर एक-एक चौमुखजी स्थित है। इसकी १२ प्रतिमाए होती है। ऐसे प्रत्येक सिद्धायतन में कुल १२० प्रतिमाजी होती है। सिद्धायतन ६९ है। इस प्रकार उसकी कुल प्रतिमाजी ६९ x १२० = ~~८३२०~~ ८२८० होती है। ये सब जिनबिंब ५०० योजन उंचे होते है। उनके विविध अंग विविध रत्नों के बने हुए होते है।